# अध्याय -6 | भारत के संदर्भ में नियोजन और सतपोषणीय विकास

Worksheet-2

Under CSR Support by ipca | Foundation
missiongyan

## बहुविकल्पी प्रश्न

**1. भारत में योजनाबद्ध आर्थिक विकास की प्रक्रिया का प्रारंभ कब से माना जाता है?**

(अ) 1 अप्रैल 1955
(ब) 1 अप्रैल 1951
(स) 1 अप्रैल 1952
(द) 1 अप्रैल 1956

**2. इंदिरा गांधी नहर परियोजना कब आरंभ हुई?**

(अ) 31 मार्च 1958 को
(ब) 31 मार्च 1948 को
(स) 30 मार्च 1958 को
(द) 30 मार्च 1948 को

**3. भरमौर किस जनजातीय समुदाय का आवास है?**

(अ) गद्दी जनजाति
(ब) गुजर
(स) बकरवाल
(द) उपर्युक्त सभी

**4. सूखा संभावित क्षेत्र विकास कार्यक्रम की शुरुआत किस पंचवर्षीय योजना में हुई?**

(अ) तीसरी पंचवर्षीय योजना
(ब) दूसरी पंचवर्षीय योजना
(स) चौथी पंचवर्षीय योजना
(द) पांचवी पंचवर्षीय योजना

**5. राजस्थान में इंदिरा गांधी नहर से सघन सिंचाई के कारण कौन सी पर्यावरणीय समस्या उत्पन्न हो गई है?**

(अ) जल का दूषित होना
(ब) जलभराव और मृदा लवणता
(स) मिट्टी का कटाव
(द) उपर्युक्त सभी

**6. 1967 ई० में योजना आयोग ने देश के कितने जिले पूर्ण या आंशिक रूप से सूखा संभावी जिले घोषित किए थे?**

(अ) 67 जिलों कों
(ब) 70 जिलों को
(स) 72 जिलों को
(द) 65 जिलों को

**7. भरमौर जनजातीय क्षेत्र में कौन सी नदी अपनी सहायक नदियों के साथ प्रवाहित होती है?**

(अ) झेलम नदी
(ब) रावी नदी
(स) व्यास नदी
(द) सतलज नदी

**8. थारु जनजाति भारत में कहाँ निवास करती है?**

(अ) ओडिशा
(ब) मध्य प्रदेश
(स) तराई क्षेत्र
(द) छोटा नागपुर

मिशन ज्ञान
पढ़ें : जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!
100% FREE!
Video COURSES | QUIZ | PDF | TEST SERIES

**9. देश के 15 जिलों में पर्वतीय क्षेत्र विकास कार्यक्रम किस पंचवर्षीय योजना में प्रारंभ किया गया था?**

(अ) तृतीय पंचवर्षीय योजना (ब) चौथी पंचवर्षीय योजना

(स) द्वितीय पंचवर्षीय योजना (द) पाँचवी पंचवर्षीय योजना

**10. नियोजन को कितने वर्गों में वर्गीकृत किया जाता है?**

(अ) पाँच (ब) चार

(स) दो (द) तीन

## रिक्त स्थान

**11.** बहुस्तरीय योजनाओं का क्रियान्वयन _____ स्तरों पर किया जाता है।

**12.** हकड़ा क्षेत्र में '_____' जनजाति के लोग अधिक संख्या में निवास करते हैं

## सत्य/असत्य

**13.** 'लहराती भूमि विकास कार्यक्रम' मुख्यतः शहरी क्षेत्रों के लिए बनाया गया था।

**14.** बहुस्तरीय योजना निर्माण की ज़िम्मेदारी केन्द्र, राज्य और जिला स्तर पर होती है।

## अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

**15.** दूसरी पंचवर्षीय योजना का मुख्य उद्देश्य क्या था?

**16.** 'रोलिंग प्लान' से क्या तात्पर्य है?

## लघूत्तरात्मक प्रश्न

**17.** पारिस्थितिकीय संतुलन के पुनः स्थापन पर क्यों ध्यान देने की आवश्यकता है?

**18.** सतत् पोषणीय विकास की अवधारणा का उदय कैसे हुआ?

## निबंधात्मक प्रश्न

**19.** सतत् पोषणीय विकास की अवधारणा का उदय कैसे हुआ?

**20.** विभिन्न पंचवर्षीय योजनाओं के मुख्य उद्देश्यों पर प्रकाश डालिए।

## HOTS

**21.** विकास एक बहुआयामी संकल्पना है, स्पष्ट कीजिए।

मिशन ज्ञान
जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!
100% FREE!
Video COURSES | QUIZ | PDF | TEST SERIES

## अध्याय -6 | भारत के संदर्भ में नियोजन और सतपोषणीय विकास

Worksheet-2



### उत्तरमाला

1. **(ब)**
भारत में योजनाबद्ध आर्थिक विकास की प्रक्रिया का प्रारंभ 1 अप्रैल 1951 से माना जाता है।

2. **(अ)**
इंदिरा गांधी नहर परियोजना 31 मार्च 1958 को आरंभ हुई।

3. **(अ)**
भरमौर गद्दी जनजातीय समुदाय का आवास है।

4. **(स)**
इस कार्यक्रम की शुरुआत चौथी पंचवर्षीय योजना में हुई।

5. **(ब)**
इस क्षेत्र में सघन सिंचाई के कारण जलभराव और मृदा लवणता की समस्याएं उत्पन्न हो गई है।

6. **(अ)**
1967 ई० में योजना आयोग ने देश के 67 जिलों कों पूर्ण या आंशिक रूप से सूखा संभावी घोषित किया था।

7. **(ब)**
भरमौर जनजातीय क्षेत्र में रावी नदी अपनी सहायक नदियों बुढ़ील और टुंडेन के साथ बहती है।

8. **(स)** तराई क्षेत्र

9. **(द)**
पर्वतीय क्षेत्र विकास कार्यक्रम को पांचवी पंचवर्षीय योजना में प्रारंभ किया गया था।

10. **(स)** दो

11. राष्ट्रीय, राज्य और जिला

12. घी

13. असत्य

14. सत्य

15. राष्ट्रीय आय में वृद्धि तथा असमानताओं में कमी के साथ रोजगार के अवसर में भी वृद्धि करना दूसरी पंचवर्षीय योजना का मुख्य उद्देश्य था।

16. 1960 के दशक के मध्य में भारत में लगातार दो सूखे (1965-66 तथा 1966-67) और 1965 में पाकिस्तान के साथ युद्ध के कारण 1966-67 तथा 1968-69 में योजना अवकाश लेना पड़ा। इस अवधि में वार्षिक योजनाएँ लागू रहीं, जिन्हें रोलिंग प्लान भी कहा जाता है। इसकी जगह छह साल की अनवरत योजना (रोलिंग प्लान) की शुरूआत की गई थी।

17. पारिस्थितिक संतुलन के पुनः स्थापन के लिए सूखा संभावी क्षेत्र के विकास के लिए वनस्पति के साथ-साथ जल, मिट्टी, मानव एवं पशु जनसंख्या के बीच ध्यान देने की आवश्यकता है। इन सतत् क्षेत्रों में सिंचाई के साथ-साथ भूमि सुधार, वनीकरण आदि पर ध्यान देने की आवश्यकता है, जिससे इन क्षेत्रों की पारिस्थितिकी के साथ-साथ सामाजिक आर्थिक सुधार भी किए जा सकते हैं।

18. सतत् पोषणीय विकास की अवधारणा का उदय 1980 के दशक में हुआ, जब वैश्विक पर्यावरणीय चिंताओं और विकास संबंधी असमानताओं के प्रति जागरूकता बढ़ी। 1987 में "ब्रेडलैंड रिपोर्ट" ने इस अवधारणा को प्रमुखता से पेश किया, जिसमें सतत् विकास को "वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकताओं को पूरा करना" और "भविष्य की पीढ़ियों की आवश्यकताओं को खतरे में डाले बिना" परिभाषित किया गया। इसके बाद, 1992 में रियो डे जनेरियो में आयोजित पृथ्वी सम्मेलन ने सतत् विकास के सिद्धांतों को वैश्विक स्तर पर मान्यता दी। यह अवधारणा पर्यावरण, समाज और अर्थव्यवस्था के समन्वय पर आधारित है, जिससे विकास को सामाजिक और पर्यावरणीय स्थिरता के साथ जोड़ना संभव हो सके।

मिशन ज्ञान
पढ़ें : जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!
100% FREE!
Video COURSES | QUIZ | DPP | TEST SERIES

**19.** संयुक्त राष्ट्र संघ ने 1983 में विश्व पर्यावरण और विकास आयोग की स्थापना इसलिए की, ताकि वैश्विक पर्यावरणीय मुद्दों और विकास की असमानताओं पर ध्यान दिया जा सके। आयोग का उद्देश्य पर्यावरण और विकास के बीच संतुलन स्थापित करना था।

इस आयोग ने 1987 में "ब्रेडलैंड रिपोर्ट" में सतत् पोषणीय विकास को परिभाषित किया। इसके अनुसार, सतत् विकास वह विकास है जो "वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकताओं को पूरा करता है" बिना "भविष्य की पीढ़ियों की आवश्यकताओं को खतरे में डाले।" यह परिभाषा आर्थिक, सामाजिक और पर्यावरणीय दृष्टिकोणों को एक साथ जोड़ती है, जिससे विकास को दीर्घकालिक स्थिरता के साथ आगे बढ़ाना संभव हो सके।

**20.** भारत की पंचवर्षीय योजनाएँ देश के आर्थिक और सामाजिक विकास के लिए महत्वपूर्ण रणनीतियाँ हैं। प्रत्येक योजना के विभिन्न उद्देश्य हैं, जिन्हें उनके कार्यान्वयन के दौरान निर्धारित किया गया। यहाँ प्रमुख पंचवर्षीय योजनाओं के मुख्य उद्देश्यों का संक्षेप में वर्णन किया गया है:

i. पहली पंचवर्षीय योजना (1951-56)
- **कृषि विकास:** खाद्य उत्पादन को बढ़ाना और कृषि में आत्मनिर्भरता प्राप्त करना।
- **संरचना विकास:** जल संसाधनों का विकास और सिंचाई परियोजनाओं की स्थापना।

ii. दूसरी पंचवर्षीय योजना (1956-61)
- **औद्योगिकीकरण:** भारी उद्योगों की स्थापना और सार्वजनिक क्षेत्र का विकास।
- **सामाजिक सुधार:** ग्रामीण विकास और समग्र आर्थिक विकास की दिशा में कदम।

iii. तीसरी पंचवर्षीय योजना (1961-66)
- **कृषि आत्मनिर्भरता:** कृषि उत्पादकता को बढ़ाना और खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करना।
- **आर्थिक स्थिरता:** आर्थिक नीतियों में स्थिरता लाना और विकास की गति को बनाए रखना।

iv. चौथी पंचवर्षीय योजना (1969-74)
- **सामाजिक विकास:** गरीबी उन्मूलन और सामाजिक समता के कार्यक्रम।
- **स्वास्थ्य सेवाएँ:** स्वास्थ्य सेवाओं का विस्तार और जनसंख्या नियंत्रण।

v. पाँचवीं पंचवर्षीय योजना (1974-79)
- **सामाजिक न्याय:** कमजोर वर्गों के विकास पर ध्यान केंद्रित करना।
- **रोजगार सृजन:** बेरोजगारी को कम करने के उपाय।

vi. छठी पंचवर्षीय योजना (1980-85)
- **ग्रामीण विकास:** ग्रामीण क्षेत्रों में आधारभूत सुविधाओं का विकास।
- **महिला सशक्तिकरण:** महिलाओं की स्थिति को सुधारना और उन्हें आत्मनिर्भर बनाना।

vii. सातवीं पंचवर्षीय योजना (1985-90)
- **आधुनिकीकरण:** औद्योगिक नीति में सुधार और प्रौद्योगिकी के उपयोग को बढ़ावा देना।
- **नवीनता:** विज्ञान और प्रौद्योगिकी में नवाचार को प्रोत्साहित करना।

viii. आठवीं पंचवर्षीय योजना (1992-97)
- **आर्थिक उदारीकरण:** निजीकरण और वैश्वीकरण की दिशा में कदम।
- **विकास की गति:** GDP वृद्धि दर में सुधार लाना।

ix. नववीं पंचवर्षीय योजना (1997-2002)
- **गरीबी उन्मूलन:** गरीबों के लिए विशेष योजनाओं का प्रारंभ।
- **सामाजिक सेवाएँ:** शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं का विस्तार।

x. दसवीं पंचवर्षीय योजना (2002-07)
- **महामारी और स्वास्थ्य:** स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार और महामारी नियंत्रण।
- **सामाजिक समावेशिता:** सभी वर्गों के विकास की सुनिश्चितता।

मिशन ज्ञान
पढ़ः जब चाहे, जहाँ चाहे, जैसे चाहे!
100% FREE!
Video COURSES | QUIZ | PDF | TEST SERIES

xi. ग्यारहवीं पंचवर्षीय योजना (2007-12)

- **समावेशी विकास:** शिक्षा, स्वास्थ्य, और बुनियादी ढाँचे में निवेश।
- **आर्थिक विकास:** क्षेत्रीय असमानताओं को कम करना।

xii. बारहवीं पंचवर्षीय योजना (2012-17)

- **आधुनिकता:** डिजिटल इंडिया और मेक इन इंडिया जैसी पहलों का विकास।
- **स्वच्छता और पर्यावरण:** स्वच्छ भारत अभियान के अंतर्गत स्वास्थ्य और स्वच्छता को बढ़ावा देना।

इन उद्देश्यों के माध्यम से भारत ने विभिन्न क्षेत्रों में समग्र विकास की दिशा में कदम उठाए हैं।

**21.** वर्तमान विश्व में विकास की जो अवधारणा और परिकल्पना प्रचलित हैं, उसे समझने और अनुकूल विकल्प प्रदान करने की जरुरत है। आर्थिक विकास जितना महत्वपूर्ण है, उतना ही महत्वपूर्ण है मानव का विकास। इसके लिए विकास की अवधरणा बदलनी होगी। विकास को मात्र आर्थिक समृद्धि का नहीं मानवीय मूल्यों के विकास का भी सूचक बनाना होगा। विकास की संकल्पना गतिक है जोकि अर्थव्यवस्था, समाज तथा पर्यावरण में सकारात्मक व अनुत्क्रमीय परिवर्तन को इंगित करती है। विकास के संदर्भ में आर्थिक विकास ही पर्याप्त नहीं है, सामाजिक कल्याण भी आवश्यक है।

द्वितीय विश्वयुद्ध के उपरांत विकास की संकल्पना आर्थिक वृद्धि की पर्याय थी, जिसे सकल राष्ट्रीय उत्पाद, प्रतिव्यक्ति आय तथा प्रतिव्यक्ति उपभोग में समय के साथ बढ़ोतरी के रूप में मापा जाता था। किंतु असमान वितरण के कारण आर्थिक रूप से समृद्ध देशों में भी गरीबी का स्तर तेज़ी से बढ़ा। इसलिए 1970 के दशक में पुनर्वितरण के साथ वृद्धि तथा वृद्धि और समानता जैसे वाक्यांश विकास की परिभाषा में शामिल किए गए। विकास एक बहुआयामी पद (टर्म) है, विकास का अर्थ एक निश्चित स्थिति से आगे की ओर परिवर्तन, प्रगति और उन्नति से है और इस परिवर्तन, प्रगति और उन्नति की दिशा और दशा सही (सकारात्मक) होनी चाहिए, इसलिए अपेक्षा की जाती है कि विकास मात्र आर्थिक समृद्धि का नहीं मानवीय मूल्यों के विकास का भी सूचक बने। अतः यह अनुभव किया गया कि विकास की संकल्पना को मात्र आर्थिक परिप्रेक्ष्य तक ही सीमित न रखा जाए, बल्कि इसमें लोगों के कल्याण, रहन-सहन का स्तर, जन-स्वास्थ्य, शिक्षा, समान अवसर तथा राजनीतिक व नागरिक अधिकारों के मुद्दे भी शामिल किए गए। इस तरह 1980 के दशक तक विकास एक बहुआयामी संकल्पना के रूप में उभरा, जिसमें समाज के सभी लोगों के सामाजिक एवं भौतिक कल्याण का समावेश था।

मिशन ज्ञान
पढ़ः जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!
100% FREE!
Video COURSES | QUIZ | PDF | TEST SERIES